संस्कृतः एक सम्पूर्ण विज्ञान

कुलदीपक शुक्ल
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
अर्जुनगंज विद्या मंदिर डिग्री कॉलेज, लखनऊ
shuklakuldeepak10@gmail.com

प्राप्त तिथिः 28.03.2015, स्वीकृत तिथिः 18.05.2015

भारत को विश्वगुरु की उपाधि मिलने का मुख्य हेतु है– भारतीय संस्कृति। इस भारतीय संस्कृति की नीव संस्कृत भाषा पर आधारित है। यह एक मिथ्या धारणा है कि यह मात्र मन्दिरों या धार्मिक रीतियों में प्रयोग करने वाली भाषा है, जब कि संस्कृत साहित्य की अपेक्षा यह पांच प्रतिशत हैं। ६५% से अधिक संस्कृत साहित्य का धर्म या पौरोहित्य कर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है। बल्कि इसके अतिरिक्त ये भाषा–दर्शन, कानून, ज्योतिष, व्याकरण, गणित, साहित्य, संगीत, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, आदि से सम्बन्ध रखती है। वास्तव में संस्कृत मुक्त विचारकों की भाषा थी उन विचारकों ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रश्न उठाया तथा उनके विभिन्न विषयों पर विस्तृत रूप से अपने ही आप उत्तरों को व्यक्त किया।

विशेष रूप से प्राचीन भारत में संस्कृत वैज्ञानिकों की भाषा थी। हम आज अन्य देशों से विज्ञान में पिछड़े हो सकते हैं परन्तु एक समय ऐसा था जब भारत विज्ञान में समस्त विश्व का नेतृत्व कर रहा था। हमारे पूर्वजों की महान वैज्ञानिक उपलब्धियां तथा हमारी वैज्ञानिक विरासत भारत को आधुनिक समय में विज्ञान में आगे ले जाने के लिए हमें पुनः प्रेरणा एवं नैतिक शक्ति प्रदान करेगी।

इस भाषा को 'देववाणी' कहा जाता है। यह हमारे दार्शनिकों वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, व्याकरण विदों, एवं राजनीतिज्ञों की भाषा थी। व्याकरण में पाणिनि एवं पतन्जलि (अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य के लेखक) की विश्व में कोई समानता नहीं कर सकता। खगोल विद्या एवं गणित में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त एवं भास्कर की रचनाओं में मानवता के लिए नए द्वार खोल दिए। ठीक उसी तरह सुश्रुत एवं चरक ने चिकित्सा के क्षेत्र में किया। दर्शनशास्त्र में गौतम(न्यायव्यवस्था के संस्थापक), कपिल(सांख्य व्यवस्था के संस्थापक), शंकराचार्य, बृहस्पति आदि ने विस्तृत रूप से दर्शनशास्त्र की पद्धतियो(प्रयोगों) को प्रस्तुत किया जिनका विश्व में किसी ने भी दर्शन तक नही किया होगा। जैमिनी की रचना 'मीमांसा सूत्र' ने मूल ग्रन्थों की विचारयुक्त व्याख्या की सम्पूर्ण पद्धति की आधारशिला रखी जो न मात्र धर्म में प्रयुक्त हुई अपितु कानून, दर्शन तथा व्याकरण इत्यादि में भी प्रयोग की गई।

साहित्य के माध्यम से वाल्मीकि व्यास, कालिदास एवं भवभूति आदि ने समाज को जो जीवन मूल्य प्रदान किए हैं सभी वैज्ञानिक आधार पर ही हैं। महर्षि पाणिनि ने उच्चकोटि के संस्कृत व्याकरण का निर्माण किया जिसने वैज्ञानिक विचारों को सामर्थ्य प्रदान की ताकि विचारों को यथार्थता, शुद्धता, तार्किकता एवं स्वच्छता से व्यक्त किया जा सके। विज्ञान को तर्क एवं यथार्थता की आवश्यकता है। आजकल हमारे विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली संस्कृत भाषा 'साहित्यिक संस्कृत या लौकिक संस्कृत' के नाम से जानी जाती है ।

सर्वप्रथम संस्कृत कृति 'ऋग्वेद' है जिसकी रचना लगभग 2000 ई0 पू0 मानी जाती है। यह विश्व साहित्य में सर्वपवित्र एवं प्राचीन ग्रन्थ है इसमें 1028 ऋचाओं के माध्यम से इन्द्र, अग्नि, सूर्य आदि देवताओं की स्तुति की गई है। वैदिक साहित्य के पश्चात् पाणिनि ने अपने समय की संस्कृत का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया तथा इसे सुसंस्कृत, शुद्ध एवं व्यवस्थित किया। ताकि इसे शुद्ध, तार्किक, यथार्थ एवं महान बना सके। अतः पाणिनि ने संस्कृत को सरल रूप में विकसित कर अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली साधन बनाया। इस भाषा ने सम्पूर्ण भारत को एक समान बना दिया ताकि उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम सभी दिशाओं के विद्वान एक दूसरे को समझ सकें।

आंग्ल भाषा में A से Z तक के वर्ण तार्किक एवं यथायोग्य विधि से व्यवस्थित नहीं हैं, परन्तु महर्षि पाणिनि ने मानव भाषा की ध्वनियों का सूक्ष्म निरीक्षण करने के बाद 14 सूत्रों में वर्णो को संस्कृत भाषा में वैज्ञानिक एवं तार्किक ढ़ंग से व्यवस्थित किया। जैसे–स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, सब मुख के आकार के अनुसार व्यवस्थित किए गए हैं। अ, ह एवं क वर्ग कण्ठ से, इ, श एवं च वर्ग तालु से, ऊ आदि होठों से उच्चारित किए जाते हैं। विश्व की किसी भाषा की वर्णमाला इस प्रकार के क्रम से व्यवस्थित नहीं हैं। तथा जब हम देखते हैं कि कितनी गहराई से हमारे पूर्वजों ने आसान तरीके से वर्णों को व्यवस्थित किया।

यहाँ न्याय एवं वैशेषिक पद्धतियों के बारे में बताना अत्यावश्यक है जिसने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। न्याय दर्शन यह बताता है कि कुछ भी स्वीकार्य नहीं है जब तक कि यह तर्क और अनुभव के अनुसार न हो तथा यह स्पष्ट रूप से वैज्ञानिक मूल्य है। इस विषय में 'डी0 पी0 चट्टोपाध्याय' की पुस्तक 'what is living & what is Dead in Indian Philosophy' देखें जो कि भारतीय दर्शन शास्त्र पर एक प्रभावी कार्य है। वैशेषिक एक परमाणु सिद्धान्त है जो प्राचीन भारत का भौतिक विज्ञान है। मौलिक रूप से न्याय एवं वैशेषिक एक ही पद्धति से सम्बन्धित थे परन्तु भौतिक विज्ञान सभी विज्ञानो का मूलाधार है। वैशेषिक को बाद में न्याय से पृथक करके इसकी अलग पद्धति बनाई गई।

सांख्य दर्शन प्रायः इन दोनों से प्राचीन है परन्तु यह पद्धति अल्प आयु वाली रही अर्थात कहा जा सकता है कि निश्चित ही सांख्य दर्शन ने भौतिक वादी दर्शन की नीव रखी जिस पर न्याय एवं वैशेषिक दर्शन खड़े किए गये। यही नियम आइन्सटीन ने अपने $E= mc^2$ सिद्धान्त में प्रयोग किया जैसे 'शब्द प्रमाण' है।

न्याय दर्शन वैशेषिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। तथा यह प्रत्यक्ष प्रमाण पर अधिक बल देता है।(भले ही कुछ समय के लिए धोखा देने वाला होता है जैसे भ्रम या मृगतृष्णां) यह भी विज्ञान के समान है क्योंकि हम पूर्व से निरीक्षण, प्रयोग तथा तर्कों पर विश्वास करते हैं। प्रत्येक स्थिति में यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्यक्ष प्रमाण हमें सत्यज्ञान ही बताए–जैसे, हम देखते हैं कि प्रातः सूर्य पूर्व में उगता है दोपहर के समय ठीक हमारे ऊपर होता है तथा शाम को पश्चिम में अस्त हो जाता है यदि हम प्रत्यक्ष प्रमाण पर निर्भर है तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता है। यही महान गणितज्ञ 'आर्यभट्ट' ने अपने ग्रन्थ 'आर्यभट्टीयम्' में लिखा है कि यदि हम यह माने कि धरती अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है तो उसी तरह का दृष्टिगत प्रभाव उत्पन्न होता ।

यह कहा जा सकता है कि न्याय दर्शन ने तर्क अत्यधिक विकसित किया तथा यह अरस्तू एवं ग्रीक के अन्य विचारकों से कही आगे था। तार्किक विचार विज्ञान के लिए परमावश्यक हैं अत : हम कह सकते हैं कि न्याय दर्शन नें भारत में विज्ञान को अधिक सम्बल एवं प्रेरणा प्रदान की तथा वह एक विशेष दर्शन के रूप में विख्यात हुआ। इस प्रकार हमारे महान वैज्ञानिकों को कष्ट नही पहुंचाना चाहिए। प्राचीन भारत में हर ओर वाद–विवाद एवं शास्त्रार्थ होते थे जिन्होंने लोगों की भीड़ में मुक्त विचारों को व्यक्त करने की आज्ञा दी तथा अपने विरोधी के प्रति आलोचना करने का तथा मुक्त रूप से विचारों में मतभेद करने का भी अवसर दिया विचारों को ऐसी स्वतन्त्रता तथा वर्णन ने विज्ञान के विकास को आगे बढ़ाया, इस प्रकार विज्ञान को भी विचारों की स्वतन्त्रता की आवश्यकता है, व्यक्ति को अपने विचारों को व्यक्त करने एवं मतभेद करने की स्वतन्त्रता हैं। महान वैज्ञानिक चरक ने अपनी पुस्तक 'चरक संहिता' में यह बताया है कि "विज्ञान के विकास के लिए वाद–विवाद आवश्यक है" विशेषकर व्यक्ति की मानसिकता के साथ वाद–विवाद करना।

अतः स्पष्ट है कि संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी होते हुए सम्पूर्ण वैज्ञानिक वाङ्मय की धात्री भी है। विश्व का कोई भी विज्ञान संस्कृत के गर्भ या गोद से ही पोषित पल्लवित होकर समाज में व्याप्त होता है।

संदर्भ

1. अवस्थी, प्रेमा(1968) लघु सिद्धान्त कौमुदी(संज्ञा सन्धि प्रकरण), अष्टम संस्करण, भारतीय प्रकाशन, चौक, कानपुर।
2. उपाध्याय, बलदेव(1997) भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर, वाराणसी।
3. द्विवेदी, कपिल देव(2004) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, रामनारायण लाल विजयकुमार, 2 कटरा रोड, इलाहाबाद।
4. आर्यभट्ट(2008) आर्यभट्टीयम्, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी।
5. बाहरी, चित्रा(1985) नीतिशतकम, प्रथम संस्करण, साहित्य सदन प्रकाशन, चित्रकूट धाम, कर्वी, बांदा।
6. चौधरी, रामविलास(1996) वैदिक साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, प्रथम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।
7. जैमिनी(1987) मीमांसा दर्शनम्, प्रथम संस्करण, तारा प्रिन्टिग प्रेस, वाराणसी।
8. पुरी, जी0 के0(1997) अर्थशास्त्रम्, प्रथम संस्करण नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया ए–5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली।
9. मिश्र, राजेश्वर(2008) नीतिशतकम्, प्रथम संस्करण, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. शर्मा, विष्णु(1935) पंचतन्त्रम्, भार्गव पुस्तकालय, गया घाट, काशी।
11. शर्मा, विष्णु(सम्वत् 2034) शान्तिपर्व महाभारत, पंचम् संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
12. शर्मा, विष्णु(सम्वत् 2067) श्रीमद्भागवतमहापुराण, पंचम् संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
13. शास्त्री, जनार्दन(1984) मनुस्मृति, प्रथम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।